Dr. Nutisri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
P. G Sem-III (2024-2026)
CC-13 : Philosophy of Religion

Problem of Evil
(अशुभ की समस्या)

जगत में अशुभ हमें स्पष्ट होता है किन्तु प्रश्न यह है कि जगत में अशुभ कहाँ से आया? चूँकि यह समस्या सबसे पहले 'Book of Job' नामक पुस्तक में उठाई गई है। सोफाक्यूस एवं एपिक्यूरस ने भी इस पर विचार किया है। परन्तु आधुनिक युग में ह्यूम ने इस समस्या को उभयतोपाश के द्वारा इस प्रकार रखा है।

'यदि संसार में ईश्वर ने अशुभ जानबूझकर पैदा किया है तो वह कल्याणकारी नहीं है' और यदि 'जगत में अशुभ उसकी इच्छा के विरुद्ध आया है तो वह सर्वशक्तिमान नहीं है किन्तु वह आया तो उसकी इच्छानुसार है या उसकी इच्छा के विरुद्ध अतः ईश्वर या तो उपकारी नहीं है या फिर सर्वशक्तिमान नहीं है परन्तु पाश्चात्य दर्शन में ईश्वर को कल्याणकारी और सर्वशक्तिमान दोनों माना गया है तब प्रश्न यह उठता है कि अशुभ क्यों है?'

इस सम्बन्ध में मिल, जेटे, जे. एस. मैकी, एन्टोसी आदि पाश्चात्य एवं समकालीन दार्शनिकों का मत है कि अशुभ का अस्तित्व ईश्वर के अस्तित्व के साथ सुसंगत नहीं है अर्थात यदि ईश्वर है तो अशुभ नहीं है और या फिर ईश्वर का स्वरूप वह नहीं है जो ईसाई अवधारणा में है। परन्तु यह अशुभ की समस्या का समाधान नहीं है।

सन्त आगस्टाइन ने अशुभ की समस्या बताते हुए उसके तीन प्रकार बतलाये हैं।—

(1) तत्वमीमांसीय या प्राकृतिक अशुभ — जैसे, भूकम्प, बाढ़, आँधी, सूखा आदि।

(2) शारीरिक या मानसिक अशुभ — जैसे, कष्ट, दुख, मृत्यु आदि।

(3) नैतिक अशुभ — जैसे, पाप, दुष्टता, चोरी इत्यादि।

प्राकृतिक अशुभ के विषय में एफ. आर. टेनेन्ट का कथन है कि ईश्वर द्वारा सृष्टि का निर्माण विकास को एक प्रक्रिया है और इसमें प्राकृतिक घटनाओं का होना अनिवार्य है। प्राकृतिक घटनाएँ कुछ व्यक्तियों के लिए अशुभ हो सकती है परन्तु सम्पूर्ण विकास प्रक्रिया के दृष्टिकोण से यह अशुभ नहीं है अतः अशुभ यदि एक व्यक्ति के लिए भी है तो वह क्यों है? सर्वशक्तिमान ईश्वर उस पर नियन्त्रण क्यों नहीं करता?

इस सम्बन्ध में विश्वव्याप्त ईश्वरवाद के समर्थक स्पिनोजा का कहना है कि प्राकृतिक अशुभ अवास्तविक और भ्रमपूर्ण है क्योंकि भ्रम की व्याख्या भी अनिवार्य है चूँकि अशुभ अनुभव का एक भावात्मक तथ्य है अवास्तविक नहीं है।

द्वितत्ववादी प्राकृतिक अशुभ की व्याख्या एक अन्य प्रतिस्पर्धी शक्ति पुद्गल के द्वारा करते हैं। मैनीकीज्म के अनुसार ईश्वर ने जगत की सृष्टि शून्य से नहीं की है वरन् उस आरम्भिक पुद्गल से की है जो ईश्वर के समान ही नित्य है तथा जगत में पहले से ही विद्यमान था। पुद्गल आत्मा का विरोधी है और वह ईश्वर की शक्ति का विरोध करता है अतः जगत में बुराई ईश्वर के कारण नहीं बल्कि उस पुद्गल के कारण है जो ईश्वर के कार्यों को अवरुद्ध करता है। परन्तु यह व्याख्या ईश्वर

को अनन्तता और निरपेक्षता के साथ असंगत है। अशुभ की व्याख्या किसी अन्य बाह्य शक्ति तथा पूर्वक नियम में नहीं मिल सकती उसे केवल ईश्वर में ही प्राप्त करनी होगी। शेलिंग इस कठिनाई को यह कह कर दूर करने का प्रयास करते हैं कि ईश्वर अशुभ के लिए उत्तरदायी नहीं है। परन्तु ईश्वरीय स्वभाव में एक अंधेय स्थान है जो अशुभ का कारण है। परन्तु यह कोई सुसंगत व्याख्या नहीं है।

ईश्वरवादी दार्शनिक लाइबनीज एक दूसरा समाधान प्रस्तुत करते हैं। जगत और उसमें स्थित प्रत्येक वस्तु सान्त है तथा सान्तता एक अपूर्णता है और अपूर्णता एक बुराई है। अतः अशुभ सान्तता का एक अवश्यम्भावी परिणाम है। परन्तु अशुभ भी एक अच्छा उद्देश्य है इससे ईश्वर के परम शुभ की महत्ता बढ़ती है। शुभ को समझने के लिए अशुभ आवश्यक है। साथ ही मनुष्य के चरित्र और व्यक्तित्व के विकास के लिए अशुभ आवश्यक है। अशुभ के होने से संसार में अनुभव की विविधता आती है। इसलिए लाइबनीज के अनुसार 'जगत के लिए अशुभ का अस्तित्व आवश्यक है।

निरपेक्षवादी हेगल का कथन है कि अशुभ शुभ के लिए एक आवश्यक कदम है। अनन्तता के दृष्टिकोण से जो अशुभ प्रतीत होता है वह ब्रह्माण्ड को प्राप्त करने के लिए साधनमात्र है। लाइबनीज के कथन के ठीक विपरीत रसल का कथन है कि ईश्वर ने जगत को अशुभ से पूर्ण बनाया है और जगत में अशुभ का अस्तित्व इसलिए है कि अशुभ को समझाया और छिपाया जा सके।

शारीरिक या मानसिक अशुभ के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि यह व्यक्तिगत कमजोरी के कारण है परन्तु इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि ईश्वर ने हमें ऐसा बनाया ही क्यों है जो अशुभ होते।

नैतिक अशुभ मनुष्य की स्वतन्त्र इच्छा का परिणाम है परन्तु विश्वव्याप्त ईश्वरवादी स्पिनोजा इसे भी अवास्तविक मानता है क्योंकि उसके अनुसार मनुष्य की स्वतन्त्रता केवल भ्रममात्र है। इस तरह अशुभ की समस्या के सम्बन्ध में हमें दो परस्पर विरोधी विचार मिलते हैं — (1) अशुभ अवास्तविक एवं अभावात्मक है (2) अशुभ जगत के लिए आवश्यक है।

(1) <u>अशुभ अवास्तविक, भ्रमात्मक और अबौद्धिक है।</u> — यह मत विश्व-व्याप्त ईश्वरवादियों का है। स्टोइक सम्प्रदाय के अनुसार अशुभ हमारे सीमित दृष्टिकोण का परिणाम है, वास्तविक नहीं। स्पिनोजा के अनुसार अशुभ हमारे अज्ञान के कारण प्रतीत होता है जबकि हेगल का कहना है कि अशुभ अबौद्धिक है इसलिए अवास्तविक है। इसी प्रकार शंकराचार्य के अनुसार भी अशुभ अवास्तविक है। परन्तु यह अशुभ की समस्या का समाधान नहीं है। चूँकि हमें दुःख, कष्ट, पीड़ा होती है यह वास्तविक है या प्रतीक इससे इसका समाधान अवास्तविक कहने से अशुभ की समस्या हल नहीं हो जाती।

(2) <u>अशुभ एक अभावात्मक विचार है</u> — यह मत मुख्यतः प्लेटो, आगस्-टाइन, प्लाटिनस तथा एक्विनास के दर्शन में मिलता है। प्लेटो के अनुसार अशुभ का होना मात्र शुभ का नहीं होना है। आगस्टाइन के व्यक्तिगत सिद्धान्त के अनुसार अशुभ कोई भावात्मक वस्तु नहीं है यह तो केवल शुभ का अपेक्षाकृत अभाव है। इसी तरह प्लाटिनस

और एक्वीनास भी अशुभ को शुभ का अभाव समझते हैं। परन्तु यह कहना कि अशुभ अभावात्मक है, अशुभ की समस्या का हल नहीं है। दुःख, दर्द, कष्ट आदि का यदि अस्तित्व है तो इस विचार से कि वह अभावात्मक मात्र है। उसमें थोड़ी सी भी कमी नहीं आती।

अशुभ के सम्बन्ध में एक विशेष मत है जिसके अनुसार अशुभ का अस्तित्व वास्तविक और आवश्यक है। इस मत के समर्थन में निम्नलिखित तर्क दिये गये हैं—

(अ) अशुभ अधिकतम शुभ के लिए आवश्यक है। अशुभ होना जरूरी है क्योंकि तभी हम शुभ प्राप्त कर सकते हैं। पीड़ाप्रद सर्जरी के बिना कभी-2 मनुष्य को पूर्ण स्वास्थ्य लाभ सम्भव नहीं होता। इस प्रकार जगत में अशुभ तो है। परन्तु ईश्वर के शुभ के साथ उसकी संगति है। क्योंकि जो अशुभ है वह अधिकतम सम्भव शुभ की प्राप्ति के लिए आवश्यक अल्पतम अशुभ है। यह निरपेक्षवादी लाइबनीज का मत है। उनके अनुसार ईश्वर ने अशुभ की स्पष्ट व्याख्या इसलिए की कि जीव उससे संघर्ष करके आत्मविकास और आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करे। परन्तु अशुभ की समस्या का यह हल संतोषप्रद नहीं है क्योंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान है और वह डाक्टर के विपरीत किसी को भी यदि कष्ट पहुँचाकर अच्छा कर सकता है क्योंकि अधिकांश जीव अशुभ से संघर्ष कर आत्मविकास के बदले मृत्यु को प्राप्त करते हैं।

(ब) अशुभ का कार्य मनुष्य की स्वतन्त्रता है। इसलिए वह भले एवं बुरे

दोनों कार्यों को करने के लिए स्वतन्त्र है। यह मत विश्वातीत ईश्वरवाद, जीवात्मी ईश्वरवाद का है। परन्तु इससे समस्या के एक ही भाग का समाधान होता है। क्योंकि प्राकृतिक और नैतिक अशुभ में अन्तर नैतिक अशुभ का कारण मनुष्य की स्वतन्त्रता है यद्यपि वह भी कल्याणकारी और सर्वशक्तिमान ईश्वर की अवधारणा के विरुद्ध है। किन्तु प्राकृतिक अशुभ के अन्तर्गत बाढ़, सूखा आदि मनुष्य के जीवन में घटित होते हैं।

(स) ईश्वर का शुभ हमसे भिन्न है। इस मत के अनुसार जो हमें अशुभ लगता है वह सर्वोच्चता के दृष्टिकोण से वास्तव में शुभ है। और ईश्वर के लिए भी शुभ है।

समीक्षा

अतः स्पष्ट होता है कि अशुभ का पूर्ण निषेध और पूर्ण स्वीकरण दोनो में ही कठिनाई है। वस्तुतः जगत में अशुभ है। इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता क्योंकि वह अनुभव का विषय है। परन्तु अशुभ शाश्वत नहीं है अन्यथा हम एक निराशावादी दर्शन तक पहुँचते है। वास्तव में अशुभ की सत्ता भौतिक, जैविक और मानसिक स्तर पर मानना अधिक समीचीन होगा। सभी मतों में यही मत मानना अधिक तर्कसंगत है कि अशुभ का अस्तित्व ईश्वर के अस्तित्व के साथ सुसंगत है। ईश्वर ने अशुभ को इस-लिए उत्पन्न किया है कि जीव उससे संघर्ष करके आत्मा का विकास कर सके।